
Shri Raghavendra Apatpariharana Stotram

श्रीराघवेन्द्र आपत्परिहरणस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shri Raghavendra Apatpariharana Stotram

File name : rAghavendraApatpariharaNastotram.itx

Category : deities_misc, gurudev, stotra

Location : doc_deities_misc

Author : Krishna Avadhutapandita Vedavyasacharya

Proofread by : Gopalakrishnan, PSA Easwaran

Description/comments : from Raghavendra Tantram

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 20, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Raghavendra Apatpariharana Stotram

श्रीराघवेन्द्र आपत्परिहरणस्तोत्रम्



श्रीकामुकाय बहुशोकाय तत्सुभमभीकाशु यच्छसि ङि भो

लोकाय तद्दुरितपाकाप्त पद्गुण्डमूकादिभावहरण ।

श्रीराघवेन्द्रपदवीर्यादिभोगभवघोराघमाशु हर भो

दारात्मजादिभववाराशिसम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ १ ॥

राजादि भक्तजन पूजालसत्पदपयोजाम्बुभिन्दुरपि

भीजायते सुविधिभुजाय दूननृषु ते जागृककरुणः ।

श्रीराघवेन्द्रपदवीर्यादिभोगभवघोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादिभववाराशिसम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ २ ॥

घोटीमदेभवरशाटीविराजिनृपकोटीशिरोविधृत-

कोटीररत्नपरिपाटीभृशारुणितपाटीरपाटुक विभो ।

श्रीराघवेन्द्रपदवीर्यादिभोगभवघोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादिभववाराशिसम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ३ ॥

वेदादिदूषककुवादादराध्य सुमोदावदाडकमडा-

दावदोषविधुरे दानवद्विषि ममादाय धेळि हृदयम् ।

श्रीराघवेन्द्रपदवीर्यादिभोगभवघोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादि भववाराशि सम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ४ ॥

द्राक्षामधुक्षराण शैक्षाकरामल कटाक्षावलोक्त उत

तत्क्षामतां हरसि भैक्षाटकस्य भुवि लक्षाधिकस्य सपदि ।

श्रीराघवेन्द्र पदवरीयादि भोगभव घोराघमाशु हर भोः

धारात्मजादि भववाराशै सम्भवदपारापदः शमयो भोः ॥ ५ ॥

यानादिसम्पदमनूनामवामुमलमानायि पूर्वसृष्ट

तेनाग्र्यते पदमतोऽनादि दुर्दुरितमानाशयाशु ममभोः ।

श्रीराघवेन्द्र पदवीर्यादि भोगभव घोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादि भववाराशि सम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ६ ॥

नागारिवाहपद्योगादरामितदागारदारधन

भोगावनामुमनुरागत तवाभिमतिवेगादुपैमि सुभ्रदम् ।

श्रीराघवेन्द्र पदवीर्यादि भोगभव घोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादि भववाराशि सम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ७ ॥

मन्त्रालयस्य तव मन्त्रादिजसुररिमन्त्रादि संलतित

तन्त्राभवत्यपिलतन्त्राधिकेष्वापरतन्त्रावमामुपगतम् ।

श्रीराघवेन्द्र पदवीर्यादि भोगभव घोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादि भववाराति सम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ८ ॥

कृष्णावधूतकृतमिष्टार्थदानयज्ञमर्थमन्त्र परि

पुष्टातुलस्तमवकष्टावह शुभमरिष्टाहरं पठतियः ।


श्रीराघवेन्द्र पदवीर्यादि भोगभव घोराघमाशु हर भोः

दारात्मजादि भववाराशिसम्भवदपारापदः शमय भोः ॥ ९ ॥


इति श्रीकृष्णावधूतविरचिते श्रीराघवेन्द्रतन्त्रे नवमपटले

आपत्परिहरणस्तोत्रम् नाम द्वितीयोऽध्यायः सम्पूर्णः ।

Proofread by Gopalakrishnan, PSA Easwaran

——
Shri Raghavendra Apatpariharana Stotram

pdf was typeset on May 20, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

